>

Title: Need to revise the salary and other emoluments of bank employees in the country.

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा): आज देश में बैंक कर्मचारियों का अधिकतर भविष्य/आकर्षक वेतनमान के लिये सरकारी बैंकों की नौकरी छोड़कर प्राइवेट बैंकों में जा रहे हैं जबकि उन पर सरकार का काफी पैसा ट्रेनिंग पर खर्च होता है, इसको बैंक प्रबंधन को समझना चाहिए । अभी भी बैंकों में काफी अल्प वेतनमान है । इसलिये बढ़ती महंगाई और पारिवारिक खर्च के चलते सरकारी बैंक वाले नौकरी छोड़कर दूसरे प्राइवेट बैंक में जा रहे हैं क्योंकि प्राइवेट बैंक वाले बिना उन पर ट्रेनिंग खर्च दिये, केवल आकर्षक वेतनमान देकर बढ़िया मानव शक्ति को अपने यहाँ रख लेते हैं और उनके बेहतर अनुभवों एवं ट्रेनिंग का फायदा उठा रहे हैं । इस माननीय सदन के माध्यम से मैं सरकार से यह मांग करता हूँ कि वह बैंक कर्मचारियों/अधिकारियों के पिछले दो बार वेतनमानों में कितना संशोधन किया गया और क्या यह बढ़ती महंगाई और बढ़ती जीवन शैली के खर्चों में महंगाई के अनुरूप है और विद्यमान दो बढ़ोतरी वेतनमानों का कितना प्रतिशत हे । मैं सरकार से यह भी मांग करता हूं कि वर्तमान परिस्थितियों में बैंक सेक्टर कर्मचारियों/अधिकारियों के हालातों में सुधार लाये जाने के लिए क्या रिफार्मस लाये जा रहे हैं या लाये जाने की संभावना है । लाये जाने से पहले जीवनशैली और बढ़ती महंगाई का ख्याल भी रखा जाये और यह भी ध्यान रखा जाये कि वे बेहतर सुख-सुविधा पाने के लिए ही सरकारी बैंक छोड़ रहे हैं तथा यह बहुत ही बेहतर मानव संसाधन है जिसे सरकारी बैंकों को पलायन करने से रोकना चाहिए ।